जयश्रीराम लांगूलोपनिषद् जयश्रीराम

GURUDEV RAJ VERMA

Contact- +91-9897507933, +91-7500292413(WhatsApp No.)

Email- mahakalshakti@gmail.com

For more info visit---

www.scribd.com/mahakalshakti

www.gurudevrajverma.com

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीअनन्तघोरप्रलयज्वालाग्निरौदस्य वीरहनुमत्साध्यसाधनाघोरमूलमंत्रस्य ईश्वर ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीरामलक्ष्मणौ देवता, सौं बीजम्, अंजनासूनुरिति शक्तिः, वायुपुत्र इति कीलकम्, श्रीहनुमत्प्रसादसिद्ध्यर्थं भूर्भुवस्स्वर्लोक-समासीनतत्त्वंपदशोधनार्थं जपे विनियोगः।

करन्यास एवं हृदयादिन्यास- इन मंत्रों के द्वारा देवता को अपनी देह में भावित करें।

ॐ भूः नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते ... अंगुष्ठाभ्यां नमः ... हृदयाय नमः।

ॐ भुवः नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते ... तर्जनीभ्यां नमः ... शिरसे स्वाहा।

ॐ स्वः नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते ... मध्यमाभ्यां नमः ... शिखायै वषट्।

ॐ महः नमो भगवते पातालगरुडहनुमते ... अनामिकाभ्यां नमः ... कवचाय हुम्।

ॐ जनः नमो भगवते कालाग्निरुद्रहनुमते ... कनिष्ठिकाभ्यां नमः ... नेत्रत्रयाय वौषट्।

ॐ तपः सत्यं नमो भगवते भद्रजातिविकटरुद्रवीरहनुमते ... करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ... अस्त्राय फट्।

ध्यानम्– वज्रांगं पिंगनेत्रं कनकमयलसत्कुण्डल आक्रान्तगण्डं दम्भोलिस्तम्भ सारप्रहरणविवशीभूतरक्षोऽधिनाथम्। उद्यल्लांगूलघर्ष प्रचलजलनिधिं भीमरूपं कपीन्द्रं ध्यायन्तं रामचन्द्रं प्लवगपरिवृढं सत्त्वसारं प्रसन्नम्।।

ध्यान पश्चात् प्रचलित सामग्रियों से भगवान् राम सहित हनुमानजी की पूजार्चना कर साधनारम्भ करें:–

मंत्र– 'ॐ नमो भगवते दावानलकालाग्निहनुमते (जयश्रियो जयजीविताय) धवलीकृतजगत्त्रय वज्रदेह वज्रपुच्छ वज्रकाय वज्रतुण्ड वज्रमुख वज्रनख वज्रबाहो वज्ररोम वज्रनेत्र वज्रदन्त वज्रशरीर सकलात्मकाय भीमकर पिंगलाक्ष उग्र प्रलयकालरौद्र वीरभद्रावतार शरभसालुवभैरवदोर्दण्ड लंकापुरीदाहन उदधिलंघन दशग्रीवकृतान्त सीताविश्वास ईश्वरपुत्र अंजनागर्भसंभूत उदयभास्करबिम्बानलग्रासक देवदानवऋषिमुनिवन्द्य पाशुपतास्त्र ब्रह्मास्त्र बैलवास्त्र नारायणास्त्र कालशक्तिकास्त्र दण्डाकास्त्र पाशाघोरास्त्र निवारण पाशुपतास्त्र

ब्रह्मास्त्र बैलवास्त्र नारायणास्त्र सर्वशक्तिग्रसन ममात्मरक्षाकर परविद्यानिवारण आत्मविद्यासंरक्षक अग्निदीप्त अथर्वणवेदसिद्धस्थिरकालाग्निनिराहारक वायुवेग मनोवेग श्रीरामतारकपरब्रह्मविश्वरूपदर्शन लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर स्थलजलाग्निमर्मभेदिन् सर्वशत्रून् छिन्धि-छिन्धि मम वैरिणः खादय-खादय मम संजीवनपर्वतोत्पाटन डाकिनीविध्वंसन सुग्रीवसख्यकरण निष्कलंक कुमारब्रह्मचारिन् दिगम्बर सर्वपाप सर्वग्रह कुमारग्रह सर्वं छेदय-छेदय भेदय-भेदय भिन्धि-भिन्धि खादय-खादय टंक-टंक ताडय-ताडय मारय-मारय शोषय-शोषय ज्वालय-ज्वालय हारय-हारय देवदत्तं नाशय-नाशय अतिशोषय-अतिशोषय मम सर्वं च हनुमन् रक्ष-रक्ष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते महावीराय सर्वदुःखविनाशनाय ग्रहमण्डल भूतमण्डल प्रेतपिशाचमण्डल सर्वोच्चाटनाय अतिभयंकरज्वर माहेश्वरज्वर विष्णुज्वर ब्रह्मज्वर वेताल ब्रह्मराक्षसज्वर पित्ततज्वर श्लेष्मसान्निपातिकज्वर विषमज्वर शीतज्वर एकाहिकज्वर द्व्याहिकज्वर त्र्यैहिकज्वर चातुर्थिकज्वर अर्धमासिकज्वर मासिकज्वर षाण्मासिकज्वर सांवत्सरिकज्वर

अस्थ्यन्तर्गतज्वर महापस्मार श्रमिकापस्मारांश्च भेदय-भेदय खादय-खादय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते अंगशूल अक्षिशूल शिरश्शूलगुल्मशूल उदरशूल कर्णशूल नेत्रशूल गुदशूल कटिशूल जानुशूल जंघाशूल हस्तशूल पादशूल गुल्फशूल वातशूल पित्तशूल वायुशूल स्तनशूल परिणामशूल परिधामशूल परिबाणशूल दन्तशूल कुक्षिशूल सुमनश्शूल सर्वशूलानि निर्मूलय-निर्मूलय दैत्यदानवकामिनीवेतालब्रह्मराक्षस कोलाहलनागपाशानन्तवासुकि तक्षक कार्कोट कलिंग पद्म ककुमुद ज्वलरोगपाश महामारीन् कालपाशविषं निर्विषं कुरु-कुरु ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लां ग्लीं ग्लूं ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते भैरववनगतगजसिंहेन्द्राक्षीपाशबन्धं छेदय-छेदय प्रलयमारुत कालाग्निहनुमन् श्रृंखलाबन्धं विमोक्षय-विमोक्षय सर्वग्रहं छेदय-छेदय मम सर्वकार्याणि साधय-साधय मम प्रसादं कुरु-कुरु मम प्रसन्न श्रीरामसेवकसिंह भैरवस्वरूप मां रक्ष-रक्ष ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रां ह्रीं क्ष्मौं भ्रैं श्रां श्रीं क्लां क्लीं क्रां क्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ह्रां ह्रीं हुं ख ख जय-जय मारण मोहन घूर्ण-घूर्ण

दम-दम मारय-मारय वारय-वारय खे खे ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं घे घे स्वाहा।

ॐ नमो भगवते कालाग्निरौद्रहनुमते भ्रामय-भ्रामय लव-लव कुरु-कुरु जय-जय हस-हस मादय-मादय प्रज्वलय-प्रज्वलय मृडय-मृडय त्रासय-त्रासय साहय-साहय वशय-वशय शामय-शामय अस्त्रत्रिशूल डमरुखड्ग कालमृत्यु कपालखट्वांगधर अभयशाश्वत हुं हुं अवतारय-अवतारय हुं हुं अनन्तभूषण परमंत्र-परयंत्र-परतंत्र शतसहस्रकोटितेजःपुंज भेदय-भेदय अग्निं बन्धय-बन्धय वायुं बन्धय-बन्धय सर्वग्रहं बन्धय-बन्धय अनन्तादिदुष्टनागानां द्वादशकुलवृश्चिकानामेकादशलूतानां विषं हन-हन सर्वविषं बन्धय-बन्धय वज्रतुण्ड उच्चाटय-उच्चाटय मारण मोहन वशीकरण स्तम्भन जृम्भणाकर्षणोच्चाटन मिलन विद्वेषणयुद्धतर्कमर्माणि बन्धय-बन्धय ॐ कुमारीपदत्रिहारबाणोग्रमूर्तये ग्रामवासिने अतिपूर्वशक्ताय सर्वायुधधराय स्वाहा। अक्षयाय घे घे घे घे ॐ लं लं लं घ्रां घ्रौं स्वाहा। ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं हुं फट् घे घे स्वाहा।

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं ॐ नमो भगवते भद्रजानिकटरुद्रवीरहनुमते टं टं टं लं लं लं लं देवदत्तदिगम्बराष्टमहाशक्त्यष्टांगधर अष्टमहाभैरवनवब्रह्मस्वरूप दशविष्णुरूप एकादशरुद्रावतार

द्वादशार्कतेजः त्रयोदशसोममुख वीरहनुमन् स्तंभिनीमोहिनीवशीकरिणी तंत्रैकसावयव नगरराजमुखन्धन बलमुखमकरमुखसिंहमुखजिह्वामुखानि बन्धय-बन्धय स्तम्भय-स्तम्भय व्याघ्रमुखसर्ववृश्चिकाग्निज्वालाविषं निर्गमय-निर्गमय सर्वजनवैरिमुखं बन्धय-बन्धय पापहर वीर हनुमन् ईश्वरावतार वायुनन्दन अंजनासुत बन्धय-बन्धय श्रीरामचन्द्रसेवक ॐ ह्रां ह्रां ह्रां आसय-आसय ह्लीं ह्लां घ्रीं क्रीं यं भैं म्रं म्रः हट्-हट् खट्-खट् सर्वजन विश्वनज शत्रुजन वश्यजन सर्वजनस्य दृशं लं लां श्रीं ह्रां ह्रीं मनः स्तम्भय-स्तम्भय भंजय-भंजय अद्रि ह्रीं वं हीं हीं मे सर्व हीं हीं सागर हीं हीं वं वं सर्वमंत्रार्थाथर्वणवेदसिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा।''

इस महामंत्र को श्रीरामचन्द्रजी एवं शिवजी ने वीरभद्र को बताया था और वीरभद्र के द्वारा यह मंत्र लोक में प्रचलित हुआ। जो साधक गुरु आज्ञा प्राप्त कर इस दिव्यमंत्र को सिद्ध करता है वह उन समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है, जो इन मंत्रों में वर्णित है। भोजपत्र पर इसका निर्माण कर कण्ठ या भुजा में धारण करने से ग्रहपीड़ा से शान्ति मिलती है। साधकजनों से अनुरोध है कि किसी भी देवता के मंत्रों का सुयोग्य गुरु के

मागदर्शन में धैर्य एवं आस्था के साथ जप करें। अतिशीघ्रता में मंत्रों एवं देवताओं का बार-बार बदलाव न करें। यही साधना में सफलता का सुनिश्चित नियम है।

Books Written by Gurudev Shri Raj Verma ji

- Divya Mantra Sadhana Evam Siddhi

- Shri Baglamukhi Divya Sadhana